होति। अग्रये कामाय खाहाकामाय खाहा। अनु-मत्ये खाहा पुजापतये खाहा। खगाय लोकाय खाहाग्रये खिष्टकते खाहेति॥३॥

तं ब्रह्माब्रवीत्। प्रजापते ब्रह्मणा वै श्राम्यसि। श्रहम् वै ब्रह्मास्मि। मां नु यंजस्व। श्रयं ते ब्रह्मण्वान्
यज्ञो भविष्यति। श्रनु स्वर्गं लोकं वेत्स्यसीति। स
एतमग्रये कामाय पुराडाश्रमष्टाकपालं निर्वपत्।
ब्रह्मणे चरुम्। श्रनुमत्ये चरुम्। ततो वै तस्य ब्रह्मण्वान् यज्ञोऽभवत्। श्रनु स्वर्गं लोकमविन्दत्। ब्रह्मण्वान् इवा श्रस्य यज्ञो भवति। श्रनु स्वर्गं लोकं
विन्दति। य एतेन इविषा यजते। य उचैनदेवं वेद।
सोऽचं जुहोति। श्रमये कामाय स्वाहा ब्रह्मणे स्वाहा।
श्रनुमत्ये स्वाहा पुजापतये स्वाहा। स्वर्गायं लोकाय
स्वाहाग्रये स्विष्टकते स्वाहति॥ ४॥

तं यज्ञीऽब्रवीत्। प्रजापते यज्ञेन वै श्राम्यसि। श्र-इमु वै यज्ञीऽस्मि। मां नु यजस्व। श्रयं ते सत्या यज्ञा भविष्यति। श्रनु स्वर्गं लोकं वेत्स्यसीति। स एतम-प्रये कामाय पुराडाश्रमष्टाकपालं निर्वपत्। यज्ञायं चरुम्। श्रनुमत्ये चरुम्। तता वै तस्य सत्या यज्ञा-